

आदर्शीय चाचा जी,

वधर बहुत दिनों से आपका कोई समाचार नहीं मिला । आशा है आप प्रसन्न और स्वस्थ हींगे । यह पत्र मैं एक विशेष कार्य से लिख रहा हूँ ।

वधर मेरे विपक्षी भैर फ़िल्ड यह प्रचार जौरों से कर रहे हैं कि सन् १९४३ मैं श्री राम रत्न गुप्त के मुख्याक्ष्ये मैं भैर उनसे रूपये लेकर बैठा था । आपकी स्मरण होगा कि भैर स्वर्गीय श्री मूला भाईं जी को उपर्युक्त उप-चुनाव के संबन्ध मैं कार्गिस की ओर से खड़े होने के लिये लिखा था तूँ कि दमन के उस जमाने मैं कोई भी कार्गिस उच्ची दवार बनने को तैयार न था । कार्गिस उक्त चुनाव मैं भाग ले गी या नहीं इसका क्षीय उन्होंने आप पर छोड़ दिया था और आपने ही यह क्षीय दिया था कि तूँ कि कार्गिस इस चुनाव मैं भाग नहीं ले गी ऐसी दशा मैं भेरा बैठ जाना ही उचित होगा । आपका पत्र पाकर ही भैर बैठा था और मेरे फ़िल्ड जो प्रचार हो रहा है वह नितान्त मिथ्या और भ्रामक है ।

सन् १९४५ मैं स्थानीय नगर कार्गिस कमटी का सदस्य बुन लिये जाने पर हन्हों लोगों मैं यही बातें भैर फ़िल्ड प्रान्तीय कार्गिस कमटी को भी भेजी थीं । प्रान्तीय कार्गिस कमटी की ओर से श्री जगन प्रसाद रावत जी ने जाँच की थी और आपके तथा मूलाभाईं जी के पत्रों को भैर उन्हों ही दै दिया था वह पत्र आज भैर पास होता तो आपको कष्ट देने की आवश्यकता न पड़ती पर अभाग्यवश वह गुम हो बुका है, यथापि श्री रावत भैर जो जाँच की थी उसकी प्रति भैर पास है और उसमै साफ़ लिखा हुआ है कि भैर अपने बयान मैं कहा था :-

" १९४१ मैं केन्द्रीय उस्मान्ली के चुनाव मैं श्री सालिगराम जी मैं उनका नाम उच्ची दवारी के लिये पैश किया था । उनसे किसी भैर आदेश नहीं दिया कि वह नामज़दगी का पचाँ दाखिल करें । उन्होंने अपनी नामज़दगी का पचाँ दाखिल नहीं किया । जब तक कार्गिस मैं द अगस्त वाला प्रस्ताव पास नहीं किया उनमें कार्गिस मैं मतभेद था और फार्मेंट ब्लाक के नियंत्रण मैं था । कार्गिस के द अगस्त वाले प्रस्ताव के पास हो जाने के बाद मैं कार्गिस के साथ हो गया । भैर कार्गिस टिक्ट पर खड़ा नहीं किया गया । इसके प्रमाण मैं श्री मूलाभाईं देसाई का पत्र उन्होंने पैश किया । इस सम्बन्ध मैं श्री श्री प्रकाश जी का पत्र भी पैश किया गया जिसमें यह आदेश था कि उन्हें खड़ा नहीं होना चाहिये । "

जो लोग इस तरह का गन्दा प्रचार कर रहे हैं उन्हें सब कुछ मालूम है फिर भी वे अपनी हरकत से बाज़ नहीं आ रहे हैं । इनिया का नियम यह है कि एक बार जो आरौप लगाया जाय उसका क्षीय हो जाने के बाद उसे फिर दुहराया नहीं जाता पर ज्ञान तो ज्ञानी को ही दिया जा सकता है पर जो ज्ञानी होते हुये भी ज्ञानी ही बना रहना चाहेउसे कौन ज्ञान दे सकता है ।

आदर्शीय भावा जी,

हमरे बहुत दिनों से आपका कोई समाचार नहीं मिला। आशा है आप प्रसन्न और स्वस्थ होंगे। यह पत्र मैं एक विशेष कार्य से लिख रहा हूँ।

हमरे भैरविपक्षी भैरविक्षिप्त यह प्रचार जोरों से कर रहे हैं कि सन् १९४३ में श्री राम रत्न गुप्त के मुखाक्षिणी मैं भैरविपक्षी लैकर बैठा था। आपको सम्प्रण होगा कि भैरविपक्षी श्री मूला मार्ही जी को उपलिंगित उप-बुनाव के संबन्ध में कार्गिस की ओर से लड़ जाने के लिये लिखा था हूँ कि दमन के उस जमाने में लड़ जी कार्गिस उच्चीद्वार बनने की तैयार न था। कार्गिस उक्त बुनाव में भाग ले गी या नहीं इसका क्षीय उन्होंने आप पर छोड़ दिया था और आपने ही यह क्षीय दिया था कि हूँ कि कार्गिस इस बुनाव में भाग नहीं ले गी ऐसी दशा में भैरव बैठ जाना ही उचित होगा। आपका पत्र पाकर ही भैरव बैठा था और भैरविक्षिप्त जो प्रचार हो रहा है वह नितान्त मिथ्या और प्रामक है।

सन् १९४५ में स्थानीय कार कार्गिस कम्पटी का सदस्य बुन लिये जाने पर उन्हीं लोगों ने यही बातें भैरविक्षिप्त प्रान्तीय कार्गिस कम्पटी को भी भेजी थी। प्रान्तीय कार्गिस कम्पटी की ओर से भी जान प्रसाद रावत जी ने जाँच की थी और आपके तथा मूलाभार्ही जी के पत्रों की भैरविपक्षी उन्हें ही है दिया था वह पत्र बाज भैरव पास होता तौ आपको कष्ट देने की बाबृयकता न पढ़ती पर अपार्यवश वह गुम हो जुका है, यथापि भी रावत भैरव जो जाँच की थी उसकी प्रति भैरव पास है और उसमें साफ़ लिखा हुआ है कि भैरव अपने बयान में कहा था :-

"१९४१ में केन्द्रीय जैसेम्बली के बुनाव में श्री सालिगराम जी ने उनका नाम उच्चीद्वारी के लिये पैश किया था। उनसे किसी भैरव नहीं दिया कि वह नामजदगों का पर्चा दास्ति करे। उन्होंने अपनी नामजदगी का पर्चा दास्ति नहीं किया। जब तक कार्गिस ने द अगस्त बाला प्रस्ताव पास नहीं किया उनमें कार्गिस भैरव मतभैद था और कार्बी ब्लाक के नियत्रण भैरव था। कार्गिस के द अगस्त बाले प्रस्ताव के पास हो जाने के बाद भैरव कार्गिस के साथ हो गया। भैरव कार्गिस टिक्ट पर लड़ा नहीं किया गया। इसके प्रमाण में श्री मूलाभार्ही देसाई का पत्र उन्होंने पैश किया। इस सम्बन्ध में श्री श्रीप्रकाश जी का पत्र भी पैश किया गया जिसमें यह बादेश था कि उन्हें लड़ा नहीं होना चाहिये।"

जो लोग इस तरह का गन्दा प्रचार कर रहे हैं उन्हें सब झुक मात्र है फिर भी वे अपनी हरकत से बाज़ नहीं आ रहे हैं। दुनिया का नियम यह है कि एक बार जो आरोप लगाया जाय उसका क्षीय ही जाने के बाद उसे फिर दुहराया नहीं जाता पर ज्ञान तो ज्ञानी की ही दिया जा सकता है पर जो ज्ञानी होते हुये भी ज्ञानी ही बना रहना चाहें तो कौन ज्ञान दे सकता है।

पर तू कि हस प्रचार से प्रम फैलने की सम्भावना है छसलिये  
आपको कष्ट देना पड़ रहा है। आशा है कष्ट के लिये जामा  
करते हुये आप अपना पत्र शीघ्राति शीघ्र मेजने की कृपा करेंगे।

सावर, आपका

श्री श्रीपद्मराज जी,  
६, बुल्लू पुर,  
देहरादून

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA